मध्यकालीन सामंतवाद (Feudalism) के वैचारिक आधार या मानववाद (Humanism) के उदय पर प्रकाश डालिए।

सामंतवाद (Feudalism) केवल एक आर्थिक या सैन्य व्यवस्था नहीं थी, बल्कि यह मध्यकालीन समाज की एक गहरी वैचारिक और राजनीतिक संरचना थी। इसी व्यवस्था ने आधुनिक 'राष्ट्र-राज्य' (Nation-State) और 'कानून के शासन' की पृष्ठभूमि तैयार की।

यहाँ सामंतवाद के वैचारिक आधारों का विस्तृत विश्लेषण :

सामंतवाद के वैचारिक आधार (Ideological Foundations of Feudalism)

सामंतवाद मुख्य रूप से तीन स्तंभों पर टिका था: भूमि निष्ठा और ईश्वरीय आदेश।

1. भूमि स्वामित्व और 'फिफ' (The Concept of Fief)

मध्यकाल में विचार यह था कि सारी भूमि ईश्वर की है, जिसे उसने राजा को सौंपा है। राजा इस भूमि का 'स्वामी' नहीं बल्कि 'रक्षक' था।

* पदानुक्रम (Hierarchy): राजा अपनी भूमि को बड़े रईसों (Barons) को देता था, जो उसे आगे छोटे योद्धाओं (Knights) को बाँटते थे। सबसे नीचे किसान (Serfs) होते थे।

* वैचारिक महत्व: यहाँ 'अधिकार' से अधिक 'कर्तव्य' को महत्व दिया गया। भूमि केवल संपत्ति नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों का आधार थी।

2. निष्ठा और शपथ (Commendation and Oaths of Fealty)

सामंतवाद का सबसे महत्वपूर्ण वैचारिक तत्व 'निष्ठा' (Loyalty) थी। यह एक कानूनी और नैतिक समझौता था।

* वैसलage (Vassalage): जब एक व्यक्ति (Vassal) किसी स्वामी (Lord) के प्रति निष्ठा की शपथ लेता था, तो वह उसका 'मानव' (Man) बन जाता था।

* पारस्परिकता (Reciprocity): विचार यह था कि राजा सुरक्षा (Protection) देगा और सामंत बदले में सैन्य सेवा (Military Service) देगा। यदि कोई अपनी शपथ तोड़ता था, तो इसे 'राजद्रोह' के साथ-साथ 'पाप' भी माना जाता था।

3. 'महान अस्तित्व श्रृंखला' (The Great Chain of Being)

मध्यकालीन चर्च ने सामंतवाद को धार्मिक आधार प्रदान किया। उन्होंने 'महान अस्तित्व श्रृंखला' का विचार दिया, जिसके अनुसार:

* ब्रह्मांड में हर चीज़ का एक निश्चित स्थान है (ईश्वर → स्वर्गदूत → राजा → सामंत → किसान → पशु)।

* इस पदानुक्रम को तोड़ना ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध माना जाता था। इसने सामंतवाद को एक नैतिक वैधता (Moral Legitimacy) प्रदान की।